काम नहीं चलेगा। बल्कि इसके लिए समयसीमा तय की जानी चाहिए कि संबंधित योजना समय पर पूरी हो। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्र में शत-प्रतिशत लाभार्थी तक योजना का लाभ पहुंच रहा है या नहीं इसकी चिंता भी की जानी चाहिए। मुझे विश्वास है कि यदि निर्धारित समयसीमा में हम काम करेंगे तो 70 साल में ग्रामीण विकास की जो गति रही है, 2022 में जब हम आजादी के 75वीं सालगिरह मनाएंगे तब हमारी विकास की गति इतनी तेज होगी कि 70 साल से जो सपने संजोय कर ग्रामीण बैठा है, उसकी जिदंगी में बदलाव लाया जा सकता है। आज गांव का नागरिक भी शहर की तरह सुविधा चाहता है। मैं भी मानता हूं कि जो सुविधा शहर को उपलज़्ध है वह गांव में भी उपलज़्ध होनी चाहिए। शहर की तरह गांव में भी बिजली जगमगानी चाहिए। अगर शहर का बच्चा आधुनिक कज़्प्यूटर के द्वारा टेज़्नोलॉजी की शिक्षा प्राप्त कर रहा है तो गांव के बच्चे को भी उसी टेज़्नोलॉजी द्वारा प्रशिक्षित होने का अवसर मिलना चाहिए। महात्मा गांधीजी ने जो सपना देखा था, पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी ने जो चिंतन किया था, नानाजी और जयप्रकाशजी ने उन विचारों को लेकर जिया था इन्हीं आदर्श धारा को लेते हुए हम लोगों का भी यह प्रयास है कि हम ग्रामीण जीवन में बदलाव लाने के लिए महत्वपूर्ण दिशा में आगे बढ़े।